Inter IInd year
Lecture no - 46

Date 23/07/20. Assistant Professor, Marwari college Darbhanga.

कृषक आन्दोलन
(Peasants Movements)

कृषि नीति को बदलने के लिए किए गए आन्दोलन कृषक ~~आन्दोलन~~ आन्दोलन कहलाते है। कृषक आन्दोलन का इतिहास बहुत पुराना है और विश्व के सभी भागों में अलग-अलग समय पर किसानों ने कृषि नीति में परिवर्तन करने के लिए आन्दोलन किए है ताकि उनकी दशा सुधर सके। भारत के सामाजिक आन्दोलनों में कृषि कृषक आन्दोलनों का एक प्रमुख स्थान है। दूसरे कृषक समाजों की तरह भारतीय समाज में भी जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना रहा है। दैनिक आवश्यकताओं में सबसे

महत्वपूर्ण आवश्यकता: भोजन है। भोजन प्राप्ति के लिए मनुष्य आदिम अवस्था से ही प्रयासरत रहा है। आदिम अवस्था में मनुष्य शिकार तथा जंगलों से खाने योग्य पदार्थों को इकट्ठा करता था। लेकिन धीरे-धीरे सभ्यता के विकास-क्रम में मनुष्य ने कृषि के द्वारा खाद्यान्नों का उत्पादन प्रारम्भ किया। कृषि कार्य को करने वाले कृषक कहलाते हैं और यह खेत-खलिहानों में कार्य कर भोजन उत्पादित करते हैं। दुनिया विश्व के सभी समाजों में कृषि व्यवसाय आर्थिक संरचना का प्रमुख आधार है। कृषक मानव समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते रहे हैं लेकिन समाज का यही एक ऐसा वर्ग है जो समाज में सर्वाधिक शोषित, पीड़ित और तिरस्कृत है। ऐसी समस्याएँ गत में ही नहीं बल्कि विश्व के अनेक देशों जैसे जापान, मैक्सिको, दक्षिण अमरीका, आस्ट्रेलिया आदि के जीवन से भी सम्बन्धित है।

Scanned with CamScanner

युवक आन्दोलन को परिभाषित करते हुए पी० खुराना ने कहा है – "समाज का कोई भी आन्दोलन युवक आन्दोलन बन सकता है बशर्ते उसका मूल उद्देश्य युवकों के अधिकार या हक की लड़ाई हो, चाहे वह युवकों द्वारा गठित हो या दूसरे समूहों द्वारा।"

भारत में युवक आन्दोलनों का इतिहास लगभग 2500 वर्ष पुराना है। भारत एक कृषि प्रधान देश है तथा यहाँ आजीविका का प्रमुख माध्यम कृषि है। कृषि और युवक भारतीय समाज के प्रमुख अंग रहे हैं। भारत में अगर देखा जाए तो युवक प्राचीन काल से ही शोषित होते रहे हैं।